

ARYAN JAISWAL



ANSHUL

VOLUME-3

Cause Nothing Breaks Like A Heart..

ANSHUL

Volume-3

Contents

आरजू.....	1
शौक	3
एहसास	5
फ़र्क.....	7
मौसम.....	10
अंशुल	13
दाग	15
खत	18

आरज़ू

ज़माने में ढूँढोगे मोहब्बत तो खुद को खो दोगे,
प्यार एक तरफ़ा ही होगा तुम्हारा,
फिर भी उसे किसी और के साथ देखकर रो दोगे,

दर्द बढ़ते रहेंगे फ़ासलों की तरह,
हम उन्हें तकते रहेंगे आसरो की तरह,
हर दिल ही ढूँढते हैं उसके दिल में जगह,
रहता हैं पहले से कोई उधर,
तो कैसे मिलें उसके दिल में जगह,

वो आई हैं अब से, ले जाएगी कब्र तक,
इस वक़्त वो किसी और की, ए वक़्त तू थोड़ा सब्र रख,
दर्द महसूस ना हो, अगर वो मेरा हमदर्द,
रो कर भी आँसू दिखाते नहीं, कहने को रहे क्या हम
मर्द,

मेरी आरजू हैं वो, फिर भी देती धोखा हैं क्यों,
जज़्बातें ये दिल की, फिर दिल को दिल ने रोका हैं क्यों,
जो मिल सकता नहीं, प्यार उसी से होता हैं क्यों,
दिमाग का करके कत्ल, ये दिल खुद सोता हैं क्यों,

होंठ ये खामोश रहे, नज़रों ने सबकुछ बोला था पर,
उससे करीबी ना मिलें, यहीं सोचकर महसूस होता हैं डर,
बेसबर थोड़ा, पर उसकी खातिर आज भी हैं रखते सबर,
वो मेरी परेशानियों से बेखबर, हम आज भी उसकी
तकलीफों की रखते खबर,

आरजू पूरी होती नहीं, तो लगता उसका दीदार ही काफ़ी
हैं,

मेरी ग़लतियों की वो क्यों सज़ा, क्या उसे भूल जाना ही
माफ़ी हैं,

मैं गुम हूँ इन राहों, इनमें सिर्फ़ वक़्त ही हमराही हैं,

ये ज़िंदगी काग़ज़ सफ़ेद, मैं कलम और वो मेरी सियाही
हैं,

शौक

टूटने का तुझसे, शौक हैं मुझे,
टूटने दे मुझको, रोक ना मुझे,
हम खुशियाँ दे तुमको, तुम सोग दो हमें,
हमें इश्क हैं तुमसे, नहीं पड़ता फ़र्क लोग क्या कहें,
तेरे बिन, जीकर हम क्या करें,
तेरे बिन तो हम, हम ना रहें,
तेरा हाथ थाम, तेरा हर दर्द हम सहें,
तेरे सारे किस्से सुनकर, तुझसे कुछ ना कहें,

मेरा कई शौक हैं, उनमें से एक हाथ थामना तेरा,
हर रोज़ यही एक दुआ, हर रोज़ तुझसे हो सामना मेरा,
तुझको याद किए बिन, कोई काम ना मेरा,
जो तू ना मिलें, तो काश मिल जाए नाम ही तेरा,
मेरी रातें सारी तेरी, दे-दे मुझको शाम ही तेरा,

तेरी नज़रों को ढूँढना, इन नज़रों का शौक हैं,
तुमसे कुर्बत ही हम चाहें, तुमसे दूरियों का खौफ़ हैं,
तुमसे नज़दीकियों में ज़िंदगी, तुमसे दूरियों में मौत हैं,
ये कला थी मेरी सबसे सगी, अब तू इसकी सौत हैं,

शौक हैं मेरा, तुमसे नज़रें मिलाना,
तुम नज़रों से अपने, ज़ाम हमको पिलाना,
तुम बातों से अपने, हमको दुनिया दिखाना,
मुझमें मुझसे ज़्यादा तुम हो, नामुमकिन हैं तुमको
मिटाना,

शौक सारे मेरे क्या रह गए अधूरे ?

मेरे बिन तुम क्या हो गए पूरे ?

मेरे हर ख़्वाब में तेरा ज़िक्र, पर तेरे एक ज़िक्र में मैं ना
था,

तो कभी समझ ही नहीं पाई वो अनकही बातें, जो मुझे
तुझसे कहना था,

एहसास

अफ़वाहें सुनी हैं, तू किसी और के साथ हैं,
तू हमारी नहीं, फिर हमारे इतने क्यों पास हैं,
जिस्मों में दूरियाँ हैं, पर तेरी रूह करीब हैं,
तू ही यार हैं मेरा, और तू ही हरीफ हैं,

कुछ तो बात हैं तुझमें,
तू मुझको मुझसे ही रुबरू कराता हैं,
जहां की बनती नहीं तुझसे,
पर नज़रों में मेरी तू सुखरू कहलाता हैं,
लोग कहते मैं छिपाता हूँ मोहब्बत,
पर ये नज़र तो हर पल ही वो जताता हैं,
गिर के तेरे गालों के गड्ढों में,
चाहकर भी खुद को नहीं बचाता मैं,

ये मोहब्बत बाज़ारों में बिकती नहीं,
तभी इसके दाम से वाकिफ़ नहीं तू,

मेरी तरह तू शायरियाँ लिखती नहीं,
तभी इनके जज़्बात से वाकिफ़ नहीं तू,

मुश्किल सा हो गया हैं,
तेरे सामने मुस्कुराना मेरा,
दिल मेरा सो ही गया हैं,
काम हैं इसको जगाना तेरा,

तुमसे पहले कुछ महसूस भी नहीं होता था,
अब हर पल तेरी मौजूदगी एहसास होती हैं,
तुम्हारे सामने करूँ दीदार तेरा,
पीछे तेरे ये जिस्म भी अब साँस खोती हैं,

मेरे एहसासों पर तू गौर मत कर,
मेरी नज़रों को पढ़ने में तू रही असफल,
अपनी कश्ती पर मैं अकेला पर डट कर,
जो डूबेगी ये, तो आज जैसा हूँ वैसा रहूँ ना कल,

फ़र्क

की सुबह की रौशनी में ढूँढा तुझे, और रात के अंधेरे में
याद किया हैं,

हमने खुद की नज़रों में खुद को गिराकर, हर पल तेरा
साथ दिया हैं,

तेरे सामने होंठों को सिलकर बैठे, अकेले में तेरी तस्वीरों
से बात किया हैं,

सुबह बैठा था लिखने तेरी आँखों पर, और तेरी आँखों पर
लिखकर ही मैंने रात किया हैं,

की अपना सब कुछ तुझे दिया, अब देता भी तो देता
क्या,

तुम्हारी मौजूदगी चाहता था, उसके सिवा तुमसे लेता भी
तो लेता क्या,

मेरे चाहने से क्या फ़र्क पड़ता हैं, सिर्फ़ चाहने से तू मेरा
होता क्या,

अगर कदर मोहब्बत की होती, तो जिस तरह तेरे बिन मैं
रोता हूँ तू भी रोता ना,

तेरी मोहब्बत चेहरों से थी,
हमने तेरे गुस्से से प्यार किया है,
तेरी मोहब्बत लहरों से थी,
तो हमने किनारों पे तेरा इंतज़ार किया है,
मोहब्बत में हर बार जीतना ज़रूरी है क्या,
हमारी तो सबसे बड़ी जीत ही ये है की हमने तुझे हार
दिया है,

तेरे दिल में आज भी हम मुसाफ़िर रहे,
तेरी बेवजह की नफ़रत से हम मुखातिब रहे,
इबादत तेरा किया, फिर भी नज़रों में तेरी हम काफ़िर
रहे,
दिल एक मकान, उसके पहले तुम मालिक, और तुम ही
आख़िर रहे,

उन्हें फ़र्क़ इस बात से पड़ता है, की मेरे दिल में वो क्यों
रहता है,

उन्हें फ़र्क़ इस बात से पड़ता है, की उनसे मिलें दर्द क्यों
दिल हंसकर सहता है,

हम चाहकर भी उन्हें भूले कैसे, वो बनकर सियाही हर
कागज़ पर बहता है,

हम चाहकर भी उन्हें भूले कैसे, मेरे अंदर मुझसे ज़्यादा
वो जो रहता है,

मौसम

ये मौसम बेईमान, बताऊँ क्या मैं अपने जज़्बात,
ये दिखाता है धूप फिर है देता बरसात,
मैं करता दुआएँ, धूप दिखा दे बस आज,
ये कहता मुझे, तू क़बूल कर ले बरसात,

मैंने बारिश से बचने को चुना था छाँव,
वो छाँव अब मुझे धूप से भी बचा रहा है,
उसके नज़दीक रहें इसलिए रोका था पाँव,
अब ये रुकावट ही मुझे हर पल मार रहा है,

पतझड़ के जैसे ये सभी महीनें,
मेरे सालों में आती ना सावन,
ना चाहते हुए भी उसकी यादों में बीते महीनें,
मुझे कमज़ोर कर रहा मेरे अंदर का रावण,

उसके आने से खिले थे हम,
जाने से उसके मुरझाना भी वाजिब था,
बेइंतहा मोहब्बत की आज भी उसी से,
पर वो मेरी हो नहीं सकती, इस सच से भी मैं वाकिफ़
था,

जैसे गर्मी की रातों में, वो अचानक सी बारिश थी,
वो बिल्कुल वैसी थी, जैसे की हमने बरसों से खुदा से
सिफ़ारिश थी,
उसकी आँखें में डूबे थे, तो उसकी सारी ग़लतियाँ भी
खारिज थी,
वैसे तो नास्तिक हूँ मैं, पर लगता है जैसे वो खुदा की ही
क्रासिद थी,

अब तो हाल कुछ ऐसा है,
धूप से डरते हैं, बारिश की आदत हैं,
मुझे दर्द मिलते रहें, हमें लगा वो ज़िंदगी की नज़ाकत
हैं,

अब तो इंतज़ार रहता है हमें बरसात का,
क्योंकि उसी बारिश में अब आंसू छिपाते हैं,
अब तो हमारा वर्तमान ही झूठ है,
जो वो देखना चाहते हैं, हम वही दिखाते हैं,

अंशुल

हर तरफ़ अंधेरा, मैं ढूँढता हूँ अंशुल,
कभी तो लफ़्ज समझ, कभी तो नज़रें पढ़ तू,
कर दूँ ज़ाया वक़्त, बैठे-बैठे तेरी यादों पे,
कैसे हम कहें, लिखें कितना तेरी बातों पे,

अंधेरो से हैं मेरा कोई वास्ता नहीं,
तेरे दिल तक जा सकूँ वैसे कोई रास्ता नहीं,
तू ही मेरा नूर, तुझसे ज़्यादा कोई ख़ास था नहीं,
वक़्त का ही खेल ये, की तेरा मेरा राब्ता नहीं,

मेरी आँखों में देखो, तुमसे उम्मीदें हैं काफ़ी,
ज़िंदगी के सफ़र में, तुमको ही माना हैं साथी,
तुझमें नशा सा हैं, और तेरी नज़रें हैं साक़ी,
ये कला थी सिर्फ़ मेरी सगी, अब कलम भी ये तेरी ही दासी,

मैं तुझको चुनूं, तू किसी और को, मुझे फिर भी एतराज़ नहीं,

तू खुश रह बस अगर तेरे मेरे दरमियां फ़ासले, मुझे फिर भी एतराज़ नहीं,

तू मेरी सबसे ख़ास, और हमें पता हैं हम तेरे ख़ास नहीं,
तुमसे इश्क़ हैं ये तुम्हारे सिवा सब जानते हैं, मोहब्बत
रह गई ये राज नहीं,

तू दिल की बातें भी जानकर, हमसे बनती अनजान,
मेरे दिल का उठाकर तू फ़ायदा, हर पल हमें करती
बेज़ान,

हम भी खोकर खुद को, तेरी मुस्कान में ढूँढते जहां,
हम करते हैं खुद पर सितम, जब जान भूझकर तुमसे
बनते अनजान,

हर तरफ़ अंधेरा, अब ढूँढना क्या अंशुल,
राहों में मैं खो चुका हैं, धुंधला सा हैं मंज़िल,
मंज़िलें बदलती नहीं, रास्ते मिलते नहीं,

ढूँढे जब तेरा हम साथ, तुम साथ दिखते नहीं,

दाग

जिस बाग में भी गए, वहाँ फूल नहीं,
हम तेरे बिन भी ज़िंदा, पर हैं सुकून नहीं,
सियाही कर दी तेरे नाम, अब कलम में जुनून नहीं,
हम तेरे मोहल्लों में बसें ना अब, तो हमें उधर ढूँढ नहीं,

दरमियां जो फ़ासले उनकी वजह हैं तू,
पूरा दिल ही तेरा हैं, तुझको दिल में जगह क्या दूँ,
तू खुशियों की हक़दार, तुझसे शिकवा का क्या करूँ,
तुझसे दूर होकर भी, तेरे नाम पर ये कागज़ें भरूँ,

दिल फ़रेब तू फिर भी तुझसे चाहें क्यों करीबी,
तेरी मौजूदगी से अमीर थे हम, तेरे बिन अब महसूस हो
ग़रीबी,
पहले बहुत ढीठ थे हम, अब बग़ैर तेरे दिखाते क्यों
शरीफ़ी,
गई हो तुम जब से दूर, हम रह गए खुद के क्यों हरीफ़
ही,

तुमसे थे हम पूरे, अब तेरे बिना जैसे टूटा हिस्सा कोई,
मैं लिखता हूँ अब शायरियाँ, मेरी ज़िंदगी का तू बीता
किस्सा कोई,

तुमसे थी यहाँ रौशनी, तेरे बिना यहाँ सुबह ना होई,
अब तो दिल हर वक़्त सोता है, तेरे बिना ये आँखें एक
पल ना सोई,

गुलों के रंग भी अब जा चुके हैं,
वो कहते आर्यंगे सिर्फ़ तेरी वापसी पर,
मैंने तो अपने जज़्बात लिखे हैं सिर्फ़,
दुनिया को लगती ये बातें कागज़ी पर,

तुमसे दूरियाँ हैं, और सिमट चुके हैं तेरी यादों में,
असलियत में बिछड़ चुके हैं, तुमसे मिलते हैं अब ख़्वाबों
में,

ये जिस्म भी अब हैं पूछता, अब तुम कितनी रातें
जागोगे,

नज़रअंदाज़ करके उसे, फिर से उसके पीछे ही भागोगे,

अब जो फूल हैं खिले, उनमें खुशबूँ नहीं हैं,
जो तेरे ना हुए, तो खुद के भी हुए नहीं हैं,

मेरे नापाक इरादों को भी तुम पाक कर गए,
मेरे दिल में जल रहे मशाल को तुम राख कर गए,
इस ज़िंदगी के पेड़ के, तुम एक शाख बन गए,
तुझपे था पूरा आसरा, अब मेरे आस पर भी तुम दाग
भर गए,

खत

खतों में तुम हो वाकिफ़ हमसे, फिर सामने अनजान
क्यों?

मेरी नज़रों में तू ज़िंदगी, फिर औरों की नज़रों में सामान
क्यों?

तुमसे पाकर इतनी बेवफ़ाई, फिर भी दिल कहता तुमको
जान क्यों,

तुम मौजूद मेरे हर ख़्वाब में, क्या हैं मेरा जहां तू,

खतों में तुम ऐसे करती हो बातें, जैसे बरसों का हो
रिश्ता हमारा,

किसने लिखी होंगी वो किताबें, जिसमें लिखा ना हो
मिलना हमारा,

तुमसे पूरा आसरा हैं, फिर हर बार ये कलम क्यों बनता
सहारा,

कभी वाकिफ़ कभी अनजान, मुझको बता भी दो क्या हैं
रिश्ता हमारा,

तेरी खतों में बातें हैं, मेरी खतों में जज़्बात भरे,
तेरे जवाब के इंतज़ार में, ना जाने हम कितनी रात जगे,
मेरे अनकहे सवाल थे कई, आप ही उन सबका जवाब
बने,
तेरे बिना हम लिखे ही क्या, आपसे ही मेरा हर ख़्वाब
बने,

जैसी तू खतों में हैं, फिर वैसी क्यों सामने नहीं,
इनमें से कौन सा रूप तेरा झूठ हैं,
मेरी नज़रों में तू चाँद सी, पर उसकी तरह तुझपर दाग
तो नहीं,
तू सच भी हैं या झूठ हैं,

बैठे-बैठे नज़रों में तेरी में डूब सा जाऊँ,
वो नज़रें मेरी नज़र में जैसे दरियां हैं कोई,
तुझको लगाकर गले से, जन्नत जैसे मैं घूम कर आऊँ,
लिखने बैठा था कमियाँ तेरी, पर कलम कहता तुझमें
कमियाँ ना कोई,

मेरे खतों का तू देती जवाब,
मेरे जज़्बातों का भी देगी क्या,
जिस तरह तू खतों में करती हैं बातें,
कभी सामने से करेगी क्या ?

The background of the entire image is a solid blue color with a pattern of white, hand-drawn rain lines and raindrops falling diagonally from the top left towards the bottom right.

**THANKS
FOR
READING.**

**SHARE
IF
YOU
LIKED
IT.**